कार्ल मार्क्स पर आयोजित सम्मेलन के चौथे दिन यॉर्क यूनिवर्सिटी के एसोसिएट प्रोफेसर मार्सेलो ने कहा

कम्युनिस्टों ने पैदा किये हैं क्रिटिक्स

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

आद्री के तत्वावधान में कार्ल मार्क्स पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के चौथे दिन व्याख्यान देते वक्ता व देश-विदेश से आये विशेषज्ञ.

कम्युनिस्ट सोसाइटी ने पूरी दुनिया में खूब क्रिटिक्स पैदा किये. मार्क्स आइडिया ऑफ कम्युनिज्म ने कोई नया आइडिया नहीं लाया बल्कि इसने पुरानी धारणाओं पर ही काम किया. आद्री के तत्वावधान में कार्ल मार्क्स पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के चौथे दिन यॉर्क यूनिवर्सिटी के एसोसिएट प्रोफेसर मार्सेलो मस्टो ने मार्क्स आइडिया ऑफ कम्युनिज्म को क्रिटिक्स एंगल करार देते हुए कुछ इसी तरह आलोचनात्मक व्याख्यान दिया. उन्होंने रोजा लक्जमबर्ग मेमोरियल लेक्चर में अपना व्याख्यान देते हुए कहा कि मार्क्स जो कभी पूंजीवाद के विकास के विरोधी थे उन्होंने भी 1856 में यह मान लिया कि विकास मुख्य मुद्दा है. कैपिटल को लेकर उन्होंने छह प्वाइंट नये सिरे से दिये. उन्होंने कभी अरस्तू को भी गलत ठहरा दिया. दरअसल वे सूचनाओं को नये सिरे से खंगाल रहे थे और इसी क्रम में कई धारणाओं को स्थापित किया जिसमें बाद में बदलाव लाने को बाध्य हुए.

चे ग्वेरा पर कभी सत्ता का नशा नहीं चढ़ा

पाब्लो नेरुदा स्मारक व्याख्यान देते हुए इटली के इंटरनेशनल चे ग्वेरा फाउंडेशन के अध्यक्ष रॉबर्टो मसारी ने कहा कि चे पर सत्ता का नशा कभी नहीं चढ़ा. उन्होंने चे की साम्यवाद की यात्रा का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने महसूस किया कि लैटिन अमेरिकी लोगों की समस्याओं का समाधान क्रांति के जरिये ही किया जा सकता है. क्यूबा सरकार के उद्योग मंत्री के रूप में वह कारखानों में जाते थे और श्रमिकों की समस्याओं को समझने के लिए वह उनके साथ रहते थे. चे सोवियत संघ की नई आर्थिक नीति के कठोर आलोचक थे और इस विषय पर उनकी पुस्तक को 2006 तक गुप्त रखा गया. चे ग्वेरा ने कहा था कि अपने खिलाफ बोलने वालों के विरूद्ध वह हिंसा की वकालत नहीं कर सकते हैं. उनके व्याख्यान का शीर्षक 'चे गुवेरा और मार्क्स' था.

पर्यावरण में आये परिवर्तन ने बनाया मार्क्सवाद को मुद्दा

इसके पहले जापान के ओसाका राजकीय विश्वविद्यालय की एसोसिएट प्रोफेसर कोहेई साइतो ने कहा कि पर्यावरण में आये परिवर्तन ने मार्क्सवाद को केंद्रीय मुद्दा बना दिया है. 'मार्क्स और एंजेल्स : पारिस्थितिकी के दृष्टिकोण पर पुनर्विचार' विषय पर आयोजित लुकाक्स स्मारक व्याख्यान में कहा कि वैश्वीकरण के इस दौर में वनों के विनाश, ग्लोबल वार्मिंग, नाइट्रोजन चक्र में व्यवधान और प्रजातियों का अस्तित्व संकटग्रस्त होने से मार्क्सवाद की महत्ता बढ़ी है.

आद्री द्वारा कार्ल मार्क्स पर आयोजित पांच दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के चौथे दिन प्रो साइतो ने कहा कि मार्क्स और एंजेल्स के बीच बौद्धिक संबंध की कम स्पष्ट अवधारणा के कारण पश्चिमी मार्क्सवादियों ने पारिस्थिकी की मार्क्सवादी आलोचना कभी भी विकसित नहीं की. उन्होंने कहा कि पूंजी जिस चीज पर ध्यान देती है वह यही है कि किसी भी तरह संचय किया जाय. इसीलिए धरती का अधिकांश हिस्सा अगर मानवों और पशुओं के जीवित रहने के लिहाज से अनुपयुक्त भी क्यों नहीं हो जाय, यह उसके लिए कोई मायने नहीं रखता है.

लिहाजा पूंजीवाद के खात्मे के इंतजार करने के बजाय प्रकृति द्वारा बदला लेने के कारण यह अपरिहार्य हो गया है कि वैश्विक पारिस्थितिकी के संकट से लड़ रहे लोग अपने पर्यावरण के साथ मेटाबॉलिज्म पर सचेत और सक्रिय नियंत्रण हासिल करें. चौथे दिन के अन्य मुख्य वक्ताओं में ज्योर्जी प्लेखानोव स्मारक व्याख्यान देने वाली मैक्सिको के यूनाम की प्रोफेसर एल्विरा कोंचीरो भी शामिल थीं जिनके व्याख्यान का शीर्षक था, हमलोगों ने मार्क्स को कैसे पढ़ा है'. पूरे दिन पांच आलेख भी प्रस्तुत किये गये. आलेखों के प्रस्तोता पाओला रौहाला, हेलेन प्रत्तूरी, मरियम एस्लेनी, कुमारी सुनीता वी. और अलेस्सांद्रा मेज्जाद्री थे.